Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ जितिया व्रत पारण विधि ॥

॥ जीमूतवाहन सबका मंगल करें ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ नवमी को पारण कब करें ॥

पारण का अर्थ है व्रत के धार्मिक क्रम के बाद जल और भोजन लेकर उपवास समाप्त करना। जितिया का मुख्य उपवास अष्टमी से जुड़ा है और पारण सामान्यतः अगली नवमी को होता है। तिथि की शुरुआत, समाप्ति और स्थानीय परंपरा देखकर समय निश्चित करें।

पंचांग क्यों देखें

अष्टमी और नवमी घड़ी के बारह बजे नहीं बदलतीं। किसी वर्ष अष्टमी सुबह समाप्त हो सकती है, किसी वर्ष बाद में। दूसरे शहर या पुराने वर्ष का पारण समय लागू न करें। घर के बड़े या स्थानीय पंडित से अपनी जगह का विधान पूछें।

पहले से तैयारी

पीने का स्वच्छ जल, प्रसाद और हल्का भोजन तैयार रखें। लंबे उपवास के बाद जल्दबाजी में भारी भोजन न करें। घर की रीति में सूर्य को अर्घ्य, जीमूतवाहन को प्रणाम या अन्य पूजा हो तो उसका क्रम पहले समझ लें।

स्वास्थ्य में देरी न करें

चक्कर, बेहोशी, तेज कमजोरी या कोई अन्य अस्वस्थता हो तो धार्मिक समय की प्रतीक्षा में सहायता न टालें। तुरंत पानी, आवश्यक भोजन और चिकित्सकीय सहायता लें। स्वास्थ्य के कारण व्रत खोलना पड़े तो स्वयं को दोष न दें।

॥ जल और भोजन से व्रत खोलना ॥

१. स्नान और प्रार्थना

नवमी की सुबह अपनी पारिवारिक परंपरा के अनुसार स्नान करें और जीमूतवाहन का स्मरण करें। बेटे-बेटियों सहित सभी बच्चों के कल्याण की प्रार्थना करें। कथा या आरती की रीति हो तो उसे पूरा करें।

२. जल और प्रसाद

तय क्रम के बाद बैठकर धीरे-धीरे स्वच्छ जल पिएँ। प्रसाद लें और शरीर की स्थिति के अनुसार भोजन करें। लंबे समय निर्जला रहने पर बहुत मीठा या भारी भोजन एक साथ लेने के बजाय सहज भोजन चुनें।

३. परिवार के साथ भोजन

कहीं पारण में मडुआ, नोनी साग, दही-चूड़ा या अन्य क्षेत्रीय व्यंजन बनते हैं; किसी घर में अलग पकवान होते हैं। खाद्य परंपरा का सम्मान करें, लेकिन उसे सबके लिए अनिवार्य न बताएं। प्रसाद बाँटें और व्रती को विश्राम दें।

अष्टमी की समाप्ति, नवमी और पारण का समय वर्ष तथा स्थान के अनुसार बदलता है। इस पुस्तिका में स्थायी घड़ी का समय नहीं दिया गया है।

॥ सभी संतानों का मंगल हो ॥